जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जयजिनेन्द्र !!
प्राणी जगत को उनका स्वयं का जीवन बख्श दें
मनीष–नीना जैन (वीगन)

१ क्या आप **मांसाहार बनाने वाली हॉटलों** में शादियाँ और पार्टियाँ आयोजित करते है या उनमें शामिल होकर उन्हें अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करते है ?

२ क्या आप **पशुओं के चमड़े** से बने जूते–चप्पल व वस्तुओं का उपयोग करते है?

३ क्या आप ऐसे **सौंदर्यप्रसाधन सामग्री** का यह जानकर भी उपयोग करते है जिसमें पशु अंश है या पशु हिंसा को बढ़ावा मिला हो ?

४ क्या आप ऐसे **साबुन और टुथपेस्ट** का उपयोग करते है जिसमें पशु चर्बी, हड्डियों का चुरा, जिलेटिन आदि मिले हुए है?

५ क्या आप घोर हिंसा के फलस्वरूप प्राप्त **सफेद मोती, मूंगा ,बोनचायना क्राकरी, केमेरा फिल्म** का उपयोग करते है ?

६ क्या आप इस प्रकार के **दुध और दुध उत्पाद** का उपयोग करते है जहाँ उन पशुओं को असहनीय यांत्रिक पीड़ा के दौर से गुजरना पड़ता हो, ३६५ दिन जंजीरो और रस्सों से मजबूरन बंधे रहना पड़ता हो, उनके बच्चों को माँ का दुध नसीब नहीं होता हो, नर बच्चों को कत्लखानों में कटने के लिये बेच दिया जाता हों, मशीनों से उनका दुध चूस लिया जाता हो, कृत्रिम गर्भाधान दिया जाता हो, हार्मोन्स व केल्शियम के इंजेक्शन दिये जाते हो और फिर अत्यधिक दुध दोहन से कमजोर और क्षीण पशुओं को कत्ल हेतु भेज/बेच दिया गया हो ?

७ क्या आपने यह जांच करी है कि **शुद्ध घी या डालडा घी (हाइड्रो जिनेटेड वेजीटेबल ऑयल**, जिसे बेकरी और हॉटलों में उपयोग किया जाता है) में पशुओं से प्राप्त चर्बी की मिलावट तो नहीं है?

८ क्या आपने बाजार में मिलने वाले **केक,पेस्ट्री,समोसा जेल, आईसकीम**, में मिलाये जाने वाले अंडे, जिलेटिन आदि का विरोध किया है?

९ क्या आपने **सिल्क(शिफान** आदि में भी रेशमी धागा रहता है) के वस्त्र धारण करने के पहिले उन रेशमी कीड़ों को उबलते हुए देखा है?

१० क्या आपने भेड़ों–खरगोशों के बाल (**ऊनी वस्त्र**) से बनने वाले वस्त्रों का अंधाधुंध उपयोग करने के पहिले उन भेड़ो व खरगोशों की दुर्दशा की कहानी देखी या सुनी है ?

११ क्या आपको मालूम है कि **शाकाहारी सिल्क** का उत्पादन करने वाले रेशमी कीड़ों को किलो के भाव से पूर्वी भारत के प्रदेशों में बेच देते है?

१२ क्या आपको मालूम है कि **पान में लगने वाली चटनी** में जिलेटिन मिलाया जाता है जिससे वह चटनी सूखती नहीं है?

१३ क्या आपको इस बात की जानकारी है कि जो **केप्सुल** आप खा रहे है वह हमारे देश में केवल जिलेटिन से ही बनते है?

१४ क्या आपने इस बारे में सोचा है कि जो **ग्लिसरिन** आप अपने होंठो या जीभ पर लगा रहे है वह अगर साबुन कारखाने से निकला है तो उसमें पशु चर्बी के तत्व रहते है ?

१५ क्या आपको इस बात की जानकारी है कि **कागज** के निर्माण में अधिकतर निर्माता जिलेटिन का उपयोग करते है विशेषकर **चिकने कागज** पर (जिसका उपयोग पुस्तकों और पत्रिकाएँ में होता है) ?

१६ क्या आपको पता है, **खाने का लाल रंग** कोचीनियल नाम के कीड़ों को सुखाकर ही प्राप्त किये जाता है ?

१७ क्या आपने इस बात की जानकारी है कि **चांदी का बरक** जिन फिल्मनुमा पुस्तक में बना है उस फिल्म का निर्माण पशुओं की आंत से हुआ है और इसकी कीमत रु १५००० के लगभग है ?

१८ क्या कुल्लु जाते समय वहाँ मानसिक एवं शारीरिक कष्ट झेल रहे अंगोरा खरगोशों (**अंगोरा क्वालिटी के ऊनी वस्त्र** हेतु) को देखा है?

१६ क्या आप मधुमक्खीओं (उनके बच्चे एवं अंडे भी) की हिंसा से प्राप्त **शहद** व छत्ते से प्राप्त **मोम (लिपिस्टिक में रहता है)** का उपयोग करते है ?

२० क्या आपको पता है कि जो हड़डियाँ कत्लखानों से निकलती है उन्हें जलाकर बोनचार (ब्लेक कार्बन) बनाया जाता है जिसे गन्ने के रस को फिल्टर करके **शक्कर** का निर्माण किया जाता है?

२१ अंत में, क्या आपको पता है कि **हिंसा का मतलब केवल प्राण लेना ही नहीं है वरन पीड़ा देना, सताना या दुःख देना भी होता है** ?

जरा सोचिये, कि आप पशुओं के प्रति किस प्रकार की दया भावना रखते है !

जरा सोचिये, कि आप प्रकृति के प्रति कितने दयालु है, आखिर कब तक चूसते रहेंगे या खींचते रहेंगे चाहे वह पानी, पहाड़ (खदान आदि), वृक्ष, पशु और पक्षी ही क्यों न हो ! **पशु को पशु ही रहने दें उन्हें वस्तु का रूप प्रदान ना होने दे !**

जरा सोचिये, जय जिनेन्द्र का वास्तिवक मायने क्या है ?

तो आईये, Vegan,वीगन (वनस्पति आधारित भोजन एवं जीवन शैली) बनें और प्राणी जगत को उनका स्वयं का जीवन बख्श दें !

—वीगन एजुकेशन सेंटर,इन्दौर (www.indianvegan.com)